कड़ी – 22

‘जहां चाहो - जब चाहो - जितनी चाहो - कार हाजिर’

*****

आलेख - डा. मानस दास

हिंदी अनुवाद - सविता यादव

संकल्पना और समन्वय डॉ। बी के त्यागी

यह कड़ी, ड्राइवर रहित कार सवारी पर केंद्रित है। ऐसी कारें यांत्रिक बुद्धि और सीमित मेमोरी (याददाश्त) पर काम करती हैं। समय के साथ-साथ इनमें कई परिवर्तन किए जा रहे हैं, जिससे दक्षता बढ़ाई जा सके। Artificial Intelligence इसमें अहम भूमिका निभा रही है। सैकड़ों कारों से संबंधित आंकड़े पहले क्लाउड प्लेटफॉर्म पर इकट्ठे किए जाते हैं और फिर उनका विश्लेषण होता है और अंत में कोई निर्णय निकाला जाता है। विकट परिस्थितियों में भी किसी दुर्घटना से कैसे बचा जाए, इसके लिए प्रोग्राम बनाए जाते हैं। इस प्रकार की कारें, जरूरत पड़ने पर ड्राइवर द्वारा भी चलाई जा सकती हैं। यह कड़ी एक ऐसी ही कार की कहानी है, जो विकट रास्तों पर चल सकती है और जरूरत पड़ने पर, सड़क से हटकर साइड में अपने आप को पार्किंग भी कर सकती है। ये सब जब एक छोटा बच्चा जानता है तो आश्चर्य में पड़ जाता है।

छोटा सुमित जो आठवीं कक्षा का छात्र है अपने चाचा रवि से चिपटकर, आश्चर्यचकित होकर, कहानी का आनंद लेता है। रवि लगभग 40 वर्ष की आयु के हैं और पेशे से अभियांत्रिकी इंजीनियर हैं।

*****

पात्र

सुम्मी (कक्षा आठ के छात्र)

रबी (सुम्मी अंकल आयु 40)

ऋचा, (सुमी की माँ)

बरुन (सुम्मी के पिता) (आयु 45)

P1 और P2 (भीड़ में व्यक्ति)

एसआई और जमील

 # प्रारंभिक संगीत #

सुमी: अच्छा अंकल - उसके बाद क्या हुआ ? Please बताओ ना! क्या वह कार यात्रियों सहित नदी में डूब गई?

रवि: तुम्हारी कल्पना शक्ति का कोई होड़ नहीं । परंतु, वह कोई साधारण कार नहीं थी।

सुमी: क्या मतलब? चार पहियों वाली कार थी ना! कोई हवाई जहाज थोड़ी था, जो, नदी आने पर उड़ चली । कैसे अलग थी ? मेरा मतलब, दूसरी कारों से भिन्न थी क्या।

रवि: सुमी सुनो ! कार भी तो आदमी की तरह बुद्धिमान हो सकती है । क्या वाहनों को हम नई तकनीकी के सहारे, स्मार्ट नहीं बना सकते, जिससे वह जान सके और समझ सके कि आगे क्या होने वाला है? (हंसते हुए)

सुमी: सोच सके और वह भी कार! यह तो सब फिल्मों में दिखाया जाता है । क्या नाम बताया (हंसते हुए- टार्ज़न बड़ा ही फनी नाम है)।

रवि: सुमी, बॉलीवुड की खिल्ली मत उड़ाओ । एक वैश्विक नागरिक की भांति सोचो । इस प्रकार की स्मार्ट कारों पर कई फिल्में बनी है।

(सुमी की मां, रुचि का प्रवेश)

रुचि: हां - बहुत सी फिल्में बनी है । वह अंग्रेजी फिल्म क्या नाम था ? याद आया – Total Recall और उसमें जोहनी कैब जो थी। थोड़ी देर उसे भूल जाओ | तुम्हारी पसंद की दार्जिलिंग चाय हाजिर है।

रवि: हां भाभी जी। उसने तो सारी कहानी को ही बदल दिया था । नब्बे के दशक में , वो सब दिखाना, बड़े कमाल (चाय की चुस्की लेते हुए) की बात थी। और भी कई फिल्में आई थी।

रुचि: हां, मुझे याद आ रहा है। एक थी Timecop और ... और... दूसरी का नाम था…?

रवि: The Fifth Element

रुचि: रवि - सही कहा । उस फिल्म में तो उड़ने वाली कार भी दिखाई थी।

सुमी: चाचा.... क्या घिसी पिटी फिल्मों की बात कर रहे हो? पहले मुझे वो कहानी सुनाओ - नहीं तो कुट्टी।

रवि: देखो भाभी! किस प्रकार सुमी मुझे, ब्लैकमेल कर रही है । अच्छा बाबा अच्छा । यह बताओ कहां छोड़ा था ?

रुचि: वो कार वाली कहानी । चीजें इतनी बदल गई है कि आजकल के बच्चे, इतिहास की कहानियों में कोई interest ही नहीं लेते और ना ही, अली-बाबा और 40 चोर जैसी किंवदंतियों में।

सुमी: मां, आप नहीं समझोगी । वर्तमान में जीना सीखो ।

रवि: ओह ! ऐसे नहीं कहते हैं । मैं एक कार की बात कर रहा था जो पश्चिम बंगाल में चेल नदी पर बने पुल को पार कर रही थी। लगातार हो रही वर्षा के कारण, वह पुल टूट गया और …

रुचि: और क्या? क्या वो कार उस समय पुल पर जा रही थी ?

रवि: वह कार तेज बहाव में जा गिरी । उस समय, उसमें, ड्राइवर के अतिरिक्त तीन सवारियां और थी ।

रुचि: क्या दुख की घड़ी रही होगी । सारे-के-सारे तेज बहाव के कारण मारे गए होंगे ।

रवि: नहीं, ऐसा नहीं हुआ । यहीं तो कहानी में twist आता है (हंसते हुए) । उस कार को ऐसे बनाया गया था, कि, इस प्रकार की स्थितियों में, यात्री सुरक्षित बच सकें । तुरंत कार अपने आपातकालीन मोड में आ गई । स्थिति को भांपते हुए तुरंत ब्रेक लगे, और कार, पीछे की ओर घूम गई ।

रुचि: क्या कह रहे हो? कार में परिवर्तन । क्या पनडुब्बी बन गई (हंसते हुए) ?

सुमी: अंकल, यहा नदियां इतनी गहरी नहीं होती कि पनडुब्बी चल सके ।

रवि: भाभी जी.. अब तो सुमी का दिमाग पूरा दौड़ रहा है। मेरे विचार में, उसके दिमाग में न्यूटिलस की कहानी चल रही है।

रुचि: न्यूटिलस – अद्भुत साइंस फिक्शन (science fiction),19वीं सदी के अंत में Jules Verne का अद्भुत काम ।

रवि: आपने ठीक कहा है । न्यूटिलस नामक कपोल कल्पित पनडुब्बी को उस समय

कैप्टन नैमो चला रहा था । देखो-देखो, रुचि भी कितनी रुचि ले रही है।

सुमी: अच्छा, बहुत हुआ । सारे टोन्ट मेरे को ही देते रहो । हां…. हां.... मैं Jules Verne द्वारा लिखित नॉवल 'Twenty Thousand Leagues Under the Sea' के बारे में सोच रही थी । उस कार का क्या हुआ ? क्या वह पनडुब्बी में बदल गई थी या फिर उड़न तस्तरी में ?

रवि: नहीं सुमी, ऐसा नहीं है | हालांकि, आने वाले समय में यह मुमकिन हो सकेगा । वो कार किसी दूसरे कारणों से सुरक्षित बच सकी।

रुचि: अच्छा, मेरे को सोचने दो । हां, समझ में आया। उस कार में सुरक्षा के लिए एयर-बैग जैसी सुविधा होगी । मेरा अनुमान है कि, जैसे ही रुकते समय तेज झटका लगा होगा तो एयर-बैग खुल गए होंगे । इस प्रकार कार में बैठे सभी सुरक्षित बच गए होंगे।

रवि: भाभी जी ! कल्पना की दृष्टि से आपका अनुमान ठीक है । कार में लगे एयर-बैग का, कमाल भी है (हंसते हुए)।

सुमी: परंतु चाचा... मैं कुछ समझी नहीं कैसे एक कार, बहते पानी में, एयर-बैग खुलने से बच सकती है ।

रवि: हां भई। वो कार पानी पर तैरने लगी और सवारियाँ सुरक्षित - है ना कमाल की बात ? कार में लगे सेंसर ने स्थिति को भांपा । इसके अतिरिक्त आवाज को पहचानने वाले सेंसर भी होते हैं, जो सिग्नल रिसीव करते हैं । हो सकता है - ड्राइवर ने आवाज लगाई हो कि पानी में डूब रहे हैं । इस स्थिति में कार में लगा सिस्टम काम करने लग जाता है।

रुचि: क्या बात है! बड़े होशियार हो रवि भईया (हंसते हुए)

रवि: छोटा सा सुधार भाभी । यह कमाल था कृत्रिम होशियारी - मेरा मतलब artificial intelligence का। ।

सुमी: अब समझ में आया कि आप किसकी बात कर रहे हो । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यहां भी अपना दखल देने पहुंच गई । आप की कहानी भी कपोल कल्पित ..... कहीं कोई सच्चाई नहीं । **(हताशा दिखाते हुए)**

रवि: सुमी... आज की नई पीढ़ी भी ऐसा सोचेगी तो क्या होगा? A.I यानी जिस कृत्रिम

बुद्धि की हम बात कर रहे हैं, वो एक हकीकत है । अब तो सुमी को भाभी ही समझा सकती है ।

रुचि: रवि इस मामले में, मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकती हूं ।

रवि: अच्छा ! ये जिम्मेदारी मैं ही लेता हूं । परंतु अभी नहीं । अब मैं जाना चाहूंगा, एक जरूरी काम जो याद आया । आने वाले रविवार को, नई कहानियों के साथ फिर आऊंगा (हंसते हुए)

सुमी: यानी - कपोल कल्पित। कहीं कोई सच्चाई नहीं(हंसते हुए) I

रवि: ये उसी समय बताऊंगा (हंसते हुए) अच्छा सुमी, मैं चलना चाहूंगा। बाय-बाय सुमी । बाय - भाभी जी।

सुमी: बाय अंकल! टेक केयर!

(दृश्य परिवर्तन संगीत)

सड़क पर सुमी के सामने एक दुर्घटना घटी है । तेज गति से जा रहा ट्रक, एक मोटरसाइकिल को टक्कर मार देता है । आस-पास के लोग वहां पर जमा हो जाते हैं । थोड़ी देर बाद सुमी के पिता भी वहां पहुंच जाते हैं ।

दर्शक 1: इस ट्रक को तो इस सड़क पर आना ही नहीं चाहिए था । ये इतनी संकरी सड़क है, और ट्रकों के लिए तो मना ही है । देखो, कितना बड़ा बोर्ड जो लगा हुआ है ।

दर्शक 2: हो सकता है, वो ठेकेदार लेकर आया हो।

वरुण: कौन ठेकेदार?

दर्शक 2: वो व्यक्ति, जो खेल के मैदान के दूसरी तरफ ऊंची बिल्डिंग बना रहा है ।

वरुण: देखो... इस मोटरसाइकिल वाले के कितनी चोट लगी है ।

दर्शक 1: मैंने एंबुलेंस को फोन कर दिया है । जल्दी ही पहुंचने वाली है ।

वरुण: अच्छा……. क्या हुआ था? क्या ट्रक ड्राइवर से संतुलन बिगड़ गया ।

दर्शक 2: आप मोटरसाइकिल सवार को निर्दोष नहीं कह सकते । आजकल के युवा इतनी लापरवाही से चलते हैं, पूछो ही मत।

दर्शक 1: हम में से दुर्घटना के समय कोई नहीं था । दोपहर का समय होने के कारण, सभी दुकानें भी बंद थी ।

वरुण: ट्रक ड्राइवर कहां है?

दर्शक: ड्राइवर और उसका सहायक दोनों ही भाग खड़े हुए । ठेकेदार को भी फोन मिलाया था, परंतु उसका फोन भी बंद पड़ा था ।

वरुण: अच्छा ये बात है। पर पुलिस को तो सूचित करना चाहिए था । पुलिस इसकी रिपोर्ट लिख **लिखें** जिससे आगे की कार्यवाही हो सके।

दर्शक 1: सही कहा.. देखो.. देखो. उधर पुलिस आ रही है।

(पुलिस की गाड़ी की आवाज/ जीप के रुकने की ध्वनि और गाड़ी से सहायक निरीक्षक बाहर आते हैं)

सहायक निरीक्षक: हटिए ... हटिए ....एक तरफ हटिए । मुझे देखने दो । अभी क्या स्थिति है?

दर्शक 1: साहब इधर से आइए । देखो कितना खून निकल रहा है ।

सहायक निरीक्षक: क्या किसी ने एंबुलेंस को कॉल किया है?

वरुण: हां, मैंने फोन कर दिया था । आ रही होगी । सर! आपका नाम?

सहायक निरीक्षक: मैं असीम घोष, सहायक निरीक्षक । आपका नाम?

वरुण: सर! हम इस कालोनी के निवासी हैं । दुर्घटना की तेज आवाज सुनकर हम यहां आए हैं । यह घायल व्यक्ति दर्द से चिल्ला रहा था, इसकी कराहने की आवाज से हम…

सहायक निरीक्षक: समझा ! इस लड़के को तुरंत चिकित्सा की जरूरत है । अच्छा यही होगा, बिना देरी किए मैं पुलिस की गाड़ी से इसे अस्पताल ले चलूं । घटना से संबंधित जानकारी लेने और रिपोर्ट बनाने के लिए उसके बाद आता हूं ।

दर्शक 1: साहिब, यह ठीक रहेगा । हम आपको यहीं पर मिलेंगे ।

सहायक निरीक्षक: ओके! हवलदार, लड़के को गाड़ी में डालो । इसकी जान बचाने के लिए हमें इसका खून रोकना होगा । सहयोग के लिए धन्यवाद शाम को पुनः मिलते हैं ।

(आपसी कानाफूसी... अरे, उसको जीप में रखा जा रहा है । हे भगवान! कितना खून निकल रहा है । जीप स्टार्ट होती है और चली जाती है । भीड़ धीरे-धीरे कम

हो जाती है और लोग अपने घरों की ओर चल देते हैं । सुमी अपने पापा का इंतजार कर रही है और जानना चाह रही है कि क्या हुआ हैं । वरुण घंटी बजाता है और सुमी घर का दरवाजा खोलती है ।)

सुमी: पापा क्या हुआ? बहुत तेज आवाज आई थी ।

वरुण: हां बेटा। एक मोटरसाइकिल सवार को ट्रक ने टक्कर मार दी । सुमी, अपनी मां को कहना, एक गिलास पानी दे।

रुचि: पहले आप आराम से बैठ तो जाइए । मैं पानी लेकर आती हूं ।

वरुण: सुमी बेटा! धीरे-धीरे सभी लोग गैर-जिम्मेदारान होते जा रहे हैं । कहीं कोई अनुशासन की बात ही नहीं । मुझे डर लगता है कि तुम्हारी पीढ़ी के लोग इतनी जल्दी में क्यों है?

रुचि: जी पानी । मैं भी सोच में पड़ी थी कि गली में क्या हो रहा है ?

वरुण - पानी रख दिया है। (वरुण पानी पीता है)

वरुण: आह.. अब थोड़ी जान आई । यह पानी भी किसी अमृत से कम थोड़ी है!

रुचि: अच्छा! क्या घटना हो गई थी?

वरुण: हे भगवान - कितनी गंभीर चोट लगी थी । रुचि.. वह लड़का तो खून से लथ-पथ हो गया था.....इतना खून बहा । परंतु पुलिस निरीक्षक एक भद्र पुरुष था जो उसे तुरंत अस्पताल लेकर गया है, वो भी अपनी पुलिस की जीप में ।

सुमी: पापा ! एक्सीडेंट क्यों होते हैं?

रुचि: क्योंकि, गाड़ी चलाने वाले, ट्रैफिक के नियमों का पालन नहीं करते ।

वरुण: और कुछ तो ऐसे हैं, जिनको दूसरों के जीवन की कोई परवाह ही नहीं है।

सुमी: पापा! क्या हम वाहनों को इस प्रकार का नहीं बना सकते कि जरूरत पड़ने पर और परिस्थिति को भांपते हुए व्यवहार करने लगे ।

वरुण: रुचि ?

रुचि: क्या बात है ?

वरुण: मैं क्या सुन रहा हूं । क्या यह हमारी बेटी सुमी है या कोई दार्शनिक । इसकी बातें सुनो।

रुचि: (हंसते हुए) यह भी कल की घटना का ही प्रभाव है ।

वरुण: कौन सी घटना? मैं समझा नहीं । क्या यह कृत्रिम बुद्धि, मेरा मतलब, Artificial Intelligence पर ऑन-लाइन कोर्स कर रही है? या फिर स्कूल लाइब्रेरी से कोई पुस्तक लाकर पड़ रही है ।

रुचि: (हंसते हुए) दोनों में से कोई नहीं । कल रवि आया था और आप तो जानते ही हो, सुमी, उसकी कितनी लाडली है । दोनों ने स्मार्ट कार पर खूब बातें की ।

सुमी: अरे मम्मी ! वह तो सब Fiction Story है । कपोल कल्पित.. कहीं कोई सच्चाई नहीं ।

रुचि: हां, यह तो सही है । रवि और सुमी की अपनी-अपनी राय है। सुमी मानती है ये सब मन की कल्पनाएं हैं । Artificial Intelligence की बात भी उससे परे नहीं है ।

सुमी: मम्मी सुनो! कम-से-कम इससे हमें यह तो पता चल सके कि आगे सड़क पर कितना ट्रैफिक है ?

वरुण: यह कोई बड़ी बात नहीं है । यह तो पूल वाली कारों में, एप्स टैक्सी, ऑटो और बहुत से निजी वाहनों में मिल जाएगा । अंतरिक्ष में, उपग्रहों की मदद से, जी.पी.एस सिस्टम बड़े आराम से स्क्रीन पर वाहनों की और ट्रैफिक की स्थिति बता देता है और उसी के अनुसार अपना रास्ता तय कर सकते हैं ।

सुमी: (हंसते हुए) और फिर वो कहेगा 500 मीटर आगे दाएं लो और थोड़ी देर बाद फीड किए हुए पते पर आप पहुंच गए । हो सकता है, कार अपने आप निर्धारित स्थान पर पार्क हो जाए और आपकी विंडो अपने आप खुल जाए और बंद हो जाए।

वरुण: हां सुमी! यह सब संभव है । बहुत सारी कंपनियां स्मार्ट कार के निर्माण में लगी हुई है । और हां... कुछ एक तो सफल भी रही हैं । आगे देखो क्या होता है?

रुचि: सुमी अब धीरे-धीरे समझ रही है । नयी पीढ़ी की ये कारें कोई सपना नहीं है, बल्कि हकीकत होने जा रही हैं।

सुमी: नहीं.. नहीं.. आप ऐसा नहीं कह सकती । मैं चाहती हूं कि ये कारें अपने आप को, दुर्घटना होने से कैसे बचाये ?.... जैसे कि आज वाली दुर्घटना।

वरुण: काम की बात अब आई । दुर्घटना नहीं होनी चाहिए । वह तो तभी संभव है जब

सड़क पर चलने वाले साइकिल सवार, मोटरसाइकिल सवार, ट्रक और कार ड्राइवर सभी यातायात के नियमों का पालन करें ।

रुचि: आप कहना चाह रहे हैं कि पैदल यात्री जो नियमों को पालन नहीं कर रहा है ,स्मार्ट कार उसको भी टक्कर मार सकती है ! यहां तक कि यदि वह ज़ेबरा क्रॉसिंग से दूर हो !

वरुण: नवंबर के अंत में, अमेरिका के एरिजोना राज्य में एक ऐसी ही घटना घटी थी । स्वयं नियत्रित स्मार्ट कार, एक पैदल चल रही महिला से जा टकराई । हालांकि, वह महिला पैदल यात्रियों के लिए निर्धारित मार्ग पर ही चल रही थी ।

सुमी: पापा! क्या उसकी मृत्यु हो गई ?

वरुण: हां…….. उसका दुर्भाग्य रहा । उस स्मार्ट-कार में पैदल पथ के लिए कोई प्रावधान (provision) नहीं किया गया था । हालांकि कार ने ब्रेक लगाए, परंतु 1.3 सेकंड पहले जो कि दुर्घटना रोकने के लिए पर्याप्त नहीं था ।

रुचि: बड़ी दुख की बात है । इस प्रकार की घटना के बाद तो लोगों ने वह गाड़ी लेना ही छोड़ दिया होगा ।

वरुण: मुझे उसका तो पता नहीं, परंतु दुर्घटना के कुछ समय बाद कार पूल चलाने वाली कंपनी ने बताया कि कार में आवश्यक तकनीकी सुधार कर लिए गए हैं ।

रुचि: किस प्रकार के सुधार?

वरुण: मैं आपको सही-सही स्थिति तो नहीं बता सकता कि क्या बदलाव किए गए। परंतु कार के प्रोग्राम में इस प्रकार के परिवर्तन अवश्य किए गए होंगे जिससे चलते समय, सेंसर से पता लगा सके कि ज़ेबरा क्रॉसिंग को कोई चलकर पार तो नहीं कर रहा है ।

सुमी: परंतु..... पापा एक बात है।

रुचि: सुमी.. अब और कोई चर्चा नहीं । पहले अपना होमवर्क पूरा करो । इस रविवार को हम सभी, तुम्हारे चाचा रवि के साथ पिकनिक पर जा रहे हैं । वहां पर, अपने चाचा से इस विषय पर भरपूर बात करना । वह सारी चीजें समझा देंगे ।

वरुण: तुम्हारी मम्मी सही कह रही है । पहले पढ़ाई उसके बाद कुछ और । मैं भी थोड़ा आराम करना चाह रहा हूं । थोड़ी देर बाद उप-निरीक्षक महोदय पूछताछ और इन्कवायरी के लिए आ जाएंगे । मेरा भी वहां होना जरूरी है।

रुचि: तुमने सुना, तुम्हारे पापा ने क्या कहा है । अपने **अपने कमरे** में जाओ और अपनी पढ़ाई करो।

सुमी: अच्छा मम्मी, बाय पापा !

वरुण: ओके बाय बेटा!

दृश्य परिवर्तन संगीत

(रविवार का दिन, सभी पिकनिक पर निकल पड़ते हैं । रवि भी साथ है । रास्ते में खाना खाने के लिए एक ढाबे पर सभी रुकते हैं)

रवि: अरे जमील भाई ! पहले ठंडा पानी देना, प्यास जो लगी है ।

रुचि: लगता है रवि, तुम पहले यहां आ चुके हो ?

रवि: महीने में एक चक्कर तो इधर लग ही जाता है | इनके ढाबा का ले-आउट इतना आकर्षक नहीं है, परंतु खाने का स्वाद कमाल का है ।

(जमील पानी लेकर आता है)

जमील: नमस्ते रवि भैया ! आज खाने में क्या लेना पसंद करेंगे ?

रवि: तुम्हारे पास जो सबसे अच्छी खाने की चीज है । परंतु, मेरी प्यारी भतीजी को यदि बटरस्कॉच आइसक्रीम नहीं मिलेगी तो सब बेकार (हंसता है) इसलिए उसका पूरा ख्याल रखना ।

जमील: समझा भैया (हंसते हुए), थोड़ा समय दीजिए, मैं सारी चीजें हाज़िर करता हूं ।

वरुण: रवि, मुझे नहीं लगता, आइसक्रीम एक स्मार्ट कार की जगह ले सकती है ।

रवि: मैं समझा नहीं ।

सुमी: सही पकड़ा पापा (हंसते हुए), अब बॉल है..... रवि चाचा के पाले में।

रवि: समझा ! सुमी भी जान गई है कि Artificial Intelligence अब कारों को स्मार्ट स्वरूप देने की दिशा में अग्रसर है। पर सुमी.... तुम्हारा सवाल क्या है ? आज बिल्कुल शांत बैठी हो!

रुचि: वो सोच रही है कि स्मार्ट कार, दुर्घटनाओं को पूरी तौर पर नहीं रोक सकती है।

रवि: अच्छा यह बात है । इसी बात को लेकर इतनी गंभीर हो गई। देखो सुमी !

परिवर्तन और बदलाव प्रकृति का नियम है । स्वचलित.... ऑटोमेटिक कारों की भी यही हालत है। समय के साथ-साथ इसमें भी सुधार हो रहे हैं । थोड़ा सब्र करो ।

सुमी: अंकल, यह बात नहीं है । मेरी अपेक्षायें कुछ ज्यादा ही हैं । कार तो बहुत छोटी बात है । इसमें प्रोग्राम के द्वारा डाली गई मेमोरी की भी अपनी सीमायें होती हैं ।

रवि: सुमी.. सारा संसार इस प्रतीक्षा में है कि कब स्वचलित कारों का पूर्ण रूप से विकसित मॉडल आएगा । अब सड़क पर एक ही कार नहीं है, बल्कि सैकड़ों कारें होती हैं जो क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से एक दूसरे के संपर्क में होती हैं ।

(सुमी आसमान की ओर देखती है)

वरुण: सुमी तुम क्या निहार रही हो ? यह बरसात करने वाले बादल नहीं, जिनकी बात तुम्हारे चाचा जी कर रहे हैं, यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर डाटा प्लेटफार्म होता है जिसके माध्यम से हजारों कारें एक दूसरे के संपर्क में जुड़ी रहती हैं । ठीक कहा ना रवि..

रवि: बिल्कुल सही कहा भैया । क्लाउड कंप्यूटिंग एक बड़ा और प्रभावकारी सिस्टम है जिसके द्वारा स्मार्ट एवं स्वयं चालित कारें नियंत्रित होती हैं । IT कंपनियां.. कार निर्माण कंपनियों के साथ सहयोग कर रही हैं, जिससे इस तकनीकी को साकार रूप दिया जा सके ।

रुचि: अच्छा रवि.. क्या इन कारों में ड्राइवर की बिल्कुल भी जरूरत नहीं होगी ।

सुमी: हां अंकल.. मेरा भी यही सवाल है । ओह ! फिर तो ज्ञान भैया की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

रवि: ये ज्ञान भैया कौन हैं ?

रुचि: स्कूल की बस का ड्राइवर । सुमी उसको बहुत पसंद करती है ।

रवि: ओह! यह बात है । ज्ञान- भैया अपने कार्य को जारी रख सकेगा । हां सूमी.. वो भी तो थक सकता है । उस समय वह अपनी बस को ऑटो-ड्राइव मोड में रख सकता है और थोड़ी देर के लिए विश्राम कर सकेगा, परंतु बस उसी के नियंत्रण में होगी और उसी के अधीन होगी ।

सुमी: क्या Artificial Intelligence सिस्टम ज्ञान भैया से दिशा-निर्देश लेगा?

रवि: ले भी सकता है और नहीं भी । ये सब परिस्थिति और सिस्टम पर निर्भर करेगा ।

इसको इस प्रकार से सोचो, जब कोई, कार चलाना सीखता है तो वह कभी स्टेयरिंग को दाएं तो कभी बाई ओर घुमाता है। कभी ब्रेक लगाता है तो कभी स्पीड को कम-ज्यादा कर देता है । ऐसी स्थिति में उसके पास बैठा व्यक्ति, जो कार चलाना सिखा रहा है, वह गाड़ी को अपने नियंत्रण में ले लेता है, जिससे कोई दुर्घटना ना हो ।

सुमी: ओह, अब समझी । A.I सिस्टम सीखने वाला है और ज्ञान भैया कार सिखाने वाला शिक्षक है - सही कहा ना चाचा (हंसते हुए)!

 # सभी जोर से हंसते हैं #

रुचि: ये लो, खाना भी आ गया है । इसकी महक तो कमाल की है ।

वरुण: रवि ने इस ढाबे वाले की बहुत बड़ाई की थी, अब पता चलेगा ।

रवि: सुमी! बहुत भूख लगी है । क्या शुरू करें ?

सुमी: हां अंकल! मेरे पेट में भी चूहे दौड़ रहे हैं।

(दृश्य परिवर्तन संगीत)

रवि कार चलाता है और किसी ऐतिहासिक पिकनिक स्पॉट की ओर चल देते हैं ।

वरुण: रवि, मैं तुम्हारी कार में लंबे अंतराल के बाद सवारी कर रहा हूं । क्या तुमने इसमें कोई नया बदलाव किया है ?

रवि: अच्छा बड़े भाई, आपको कोई बदलाव नजर आया है !

वरुण: मुझे अच्छी तरह देखने दो । बाहर से तो कोई बदलाव नहीं नजर आता है । हां, अंदर कुछ बदलाव दिख रहे हैं । कुछ नए गैजेट भी लगवाये गये दिखाई दे रहे हैं । अरे रवि, लगता है तुम भी अपनी कार को स्मार्ट कार बनाने में लगे हुए हो (हंसते हुए)

रवि: (सवाल से हटकर) भैया स्मार्ट कार, एक मानव की तरह व्यवहार करती है। हालांकि मानव की सारी-की-सारी मेमोरी, किसी कार के सिस्टम में डालना बड़ा मुश्किल है | आखिर कार भी तो एक मशीन ही है और समय के साथ-साथ इसके सेंसर में भी बदलाव किए जाते हैं, जिससे इसकी दक्षता बढ़ाई जा सके।

रुचि: परंतु जहां पर कार बनायी जाती है, उन औद्योगिक इकाइयों में भी बदलाव आवश्यक हो जाते हैं ।

रवि: बिल्कुल ठीक कहा भाभी। इन इकाइयों में, स्मार्ट रोबोट, कामगारों के साथ मिलकर, काम करने लगे हैं। यहां पर भी यांत्रिक बुद्धि अपना सहयोग दे रही है। यांत्रिक रोबोट अपनी दक्षता के साथ-साथ, होने वाली घटनाओं को, कम करने में, सहयोग करते हैं।

वरुण: जहां तक मैं समझा हूं और सारांश में कहूं तो यही निष्कर्ष निकलता है कि तकनीकी ने सुरक्षा की दृष्टि से उत्पादन में सुधार और दक्षता में आमूल-चूल परिवर्तन किये हैं।

सुमी: हां पापा ! बदलाव तो सभी जगह दिख रहे हैं।

रवि: दूसरी अच्छी बात यह है कि स्मार्ट कारें अपना ख्याल बखूबी रखती हैं। कोई गड़बड़ी होने पर मालिक को पूर्व चेतावनी देना शुरू कर देती है।

सुमी: परंतु आपने, उस कार के बारे में तो कुछ नहीं बताया जो नदी में गिर गई थी। क्या वह सच्ची घटना थी ?

रवि: अच्छा, तुम ही बताओ। वो, दिखने वाली कार थी या फिर कपोल कल्पित?

सुमी: अंकल! मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा। प्लीज बताओ ना।

रवि: अच्छा बाबा अच्छा। तुम उसी कार में बैठी हो जो नदी में गिर गई थी।

सुमी: आप क्या कह रहे हो ?

रवि: हां, मैं ही उसे चला रहा था और जो तीन सवार थे वे सभी मेरे सहयोगी थे। वे तीनों आज भी मेरे साथ काम कर रहे हैं और हमारा प्रयास है कि किस प्रकार इस कार को और बेहतर स्वरूप दे सकें।

वरुण: तो ये बात है।

रवि: हां, यह कार पानी से बाहर आने में अब सक्षम है।

रुचि: हॉवर क्राफ्ट की तरह।

रवि: नहीं, ऐसा नहीं है। ना ही यह पनडुब्बी है और ना ही हॉवर क्राफ्ट। यह पानी पर तैरने लगती है और भाप के दवाब से आगे की ओर चलने लगती हैं।

सुमी: मुझे विश्वास नहीं होता।

रवि: अच्छा बताओ मैं कैसे तुम्हें विश्वास दिलाऊं कि तुम एक ऐसी कार में बैठी हो जो कृत्रिम बुद्धि द्वारा नियंत्रित है। क्या सीधा पानी में उतार दूं !

रुचि: यह तो कोई बुद्धिमता की बात नहीं ।

रवि: अच्छा सुनो ! तुम लोगों ने ड्राइव करते समय ध्यान ही नहीं दिया ।

वरुण: वो क्या ?

रवि: आज सुबह का नाश्ता बहुत भारी था और भाभी जी कह रही थी कि अब दोपहर के खाने की आवश्यकता ही नहीं, याद आया ।

रुचि: हां, ध्यान भी आया और याद भी आया।

रवि: परंतु, जैसे ही लंच का समय हुआ, सभी को भूख लग आई । यह कैसे हुआ ?

सुमी: आप कहना चाह रहे हैं कि इस कार ने हमारी भूख बढ़ा दी ।

रवि: इस कार ने अपनी सीट में लगे गैजेट द्वारा कुछ तरंगे यानी वाइब्रेशन उत्पन्न की और प्यारा सा संगीत बजाया । ये दोनों ही भूख बढ़ाने में सहायक हैं और परिणाम आपके सामने ।

वरुण: यानी, यही नियम हम पर भी लागू हुआ ।

रवि: थोड़ा सा कुछ और जोड़ना चाहूंगा ।

रुचि: विश्वास नहीं होता ।

रवि: सुमी.. सामने देखो । हम झरने के पास हैं । प्रकृति की यह सुंदरता अनमोल है । कलाकार, अपनी चित्रकारी से पेंटिंग में इसे उतारते हैं । यहां थोड़ी देर के लिए रुकते हैं । अच्छा होगा कुछ फोटो हो जाए ।

वरुण: अच्छा यह बताओ, फोटो कौन लेगा, तुम या फिर तुम्हारी ये स्मार्ट कार ।

(सभी हंसते हैं)

 # समापन संगीत #